कक्षा-12 पंचलाइट कहानी का सारांश

फणीश्वर नाथ रेणु जी हिंदी जगत के सुप्रसिद्ध आंचलिक कथाकार हैं। अनेक जन आंदोलन से वे निकट से जुड़े रहे। इस कारण ग्रामीण अंचलों ने उनके निकट परिचय किया। उन्होंने अपने पात्रों की कल्पना किसी कॉफी हाउस में बैठकर नहीं की, अपितु वे स्वयं अपने पात्रों के बीच रहे हैं। बिहार के अंचलों के सजीव चित्रण इनकी कथाओं के अलंकार हैं। पंचलाइट भी बिहार के आंचलिक परिवेश की कहानी है। शीर्षक कथा का केंद्र बिंदु है।

बिहार में एक पिछड़े गांव के परिवेश का सुंदर चित्रण प्रस्तुत किया गया है। महतो टोली में अशिक्षित लोग हैं उन्होंने रामनवमी के मेले में पेट्रोमैक्स खरीदा था जिसे वह पंचलैट कहते हैं। पंचलाइट को यह सीधे-साधे लोग सम्मान की चीज समझते हैं। पंचलाइट को देखने के लिए टोली के सभी बालक, औरतें और मर्द इकट्ठे हो जाते हैं। सरदार अपनी पत्नी को आदेश देता है कि शुभ कार्य करने से पहले वह पूजा पाठ का प्रबंध कर ले। सभी लोग उत्साहित हैं परंतु समस्या उठती है की पंचलाइट जलाएगा कौन? सीधे-साधे लोग पेट्रोमैक्स को जलाना तक नहीं जानते थे। इस टोली में गोधन नाम का एक युवक रहता है। वह गांव की मुनरी नामक एक युवती से प्रेम करता है। मुनरी की मां ने पंचों से गोधन की शिकायत भी की थी। वह उसके घर के सामने से सिनेमा का गाना गाकर निकला करता था। इस कारण पंचों ने उसे जाति से निकाल रखा है। मुनरी को पता है कि गोधन पंचलाइट जला सकता है। वह चतुराई से यह बात पंचों तक पहुंचा देती है। पंच गोधन को पुन: जाति में ले लेते हैं। वह पंचलाइट को जला देता है। मुनरी की मां गुलरी काकी प्रसन्न होकर गोधन को शाम के भोजन पर आमंत्रण देती हैं। पंच भी अति उत्साहित होकर गोधन को कह देते हैं कि तुम्हारा सात खून माफ। खूब गाओ सलीमा का गाना। पंचलाइट की रोशनी में लोग भजन कीर्तन करते हैं तथा उत्सव मनाते हैं। गोधन भी जाने के लिए उत्सुक हो जाता है।

पंचलाइट कहानी का कथानक सजीव है। सीधे-साधे अनपढ़ लोगों की संवेदनाओं की वाणी को रेणु जी ने सजीव चित्रण किया है। इस कहानी में आंचलिक जीवन की सजीव झांकी प्रस्तुत की जाती है। रेणु जी ने बड़ी सफलतापूर्वक भौतिक विकास के इस आधुनिक युग में भारतीय गांव की जातियों का सजीव चित्रण किया है। कहानी के माध्यम से रेणु जी ने अप्रत्यक्ष रूप से ग्राम सुधार की प्रेरणा भी दी है।

- पंचलाइट
- गोधन
- मुनरी
- गुलरी काकी
- पंच
- महतो टोला
- रामनवमी
- सलीमा का गाना
- डिनर
- रेणु जी